आश्रमेध्याय। ८॥

चत
ध्या
८

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

नमो श्रीगुरु तुज्यो तिषि॥ येकासले चे घटित पाह्यासि॥ चिद्रद्रष्टेसिल मला
से॥ ॐ पुरुषं सिल ह्मता॥१॥ लग्न लावि ति हात वटि॥ पोचा पंचकांचि घाटा टि॥
कठनि काळा चि काळ दृष्टी॥ घटिका प्रा[illegible] निजबोधे॥२॥ चहु पुरुषांचे
तिलवर्ण॥ लाडु वायिले संपूर्ण॥ अहं [illegible] निबळोण॥ केले जाण सर्व स्वं
॥३॥ साधन चतुष्टयाचा सम्यक॥ यथा [illegible] वउनि मधुपर्के॥ जीवभावाचि मु ॥१॥
द्देख॥ येकायेक साडविलि॥४॥ विषय [illegible] गां सांडि॥ तेचि पायांत विपायमा
॥ सावधान ह्मणा तिदोहिकडे॥ वचण घड फुडे ले तुझे॥५॥ वेवधाना चेंवि
न तुटे॥ सेह स्वभावे अंत्रपट फिटे॥ शब्द ठ परमा निखुटे॥ म्हणु ले
मटे पेलुझे॥६॥ अर्ध मात्रा रसमदृष्टि॥ निज

Joint property of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

रिति।।ओमि इश्वरु त्रिजगति।।उत्पत्तिस्थित्तिसंहर्त्ता।।२१।।बुद्धियुक्ति
विवेककररो।।तेजडें प्रकाश्यपरों।।त्याचाहि मिप्रकाशुहररों।।येऐल
क्षररों लक्षीति।।२२ ऐस्या नानापरिच्या अनुमाना।।मित्तवें वस्तय
नकें जारणा।।जेलक्षीत्ति संइ[illegible]भिमाना।।साक्षात्यरणा तेयेति
।।२३।।मुखतवें स्वतसिद्ध [illegible]।।निर्मल आदिसोदिसे।।तेंविबु
द्धिचे निविवेकवरें।।आत्म[illegible]सेनरदेहि।।२४।।येविविक्षिचा
यिति हास जाणा।।नुडमिं सं[illegible]पुरातन।।यदुआवधूतसंवाद
लक्षण।।ज्ञानसाधनसाधकों।।२५।।श्लोक।।अत्राप्युदाहरंती
ममितिहासपुरातनें।।अवधूतस्यसंवादंयदोरमिततेजसः
।।२४।।टिका।।हरिखें ह्मणानुसे गोविंदु।।उद्धवाअमुचापुर्वज

2

येदु ॥ तेरों ब्रह्म ज्ञाना सिसंवादु ॥ केला विषेदु अवधूतेंसी ॥ ३६ ॥ परा ज्ञा
येदु सिद्धरासि कैसा ॥ क्षात्र श्रष्टी चा सूर्यी जैसा ॥ राजप्रमेच्या प्रका
शा ॥ निजतेज वशालो पिनु ॥ ३७ ॥ तेरों गुरूचि लक्षणों ऐकतां ॥ सायु
ज्य मुक्ति आत्ति हाता ॥ तेहे पुरातन कथा ॥ तुम्हि आतां सांगैन ॥ ३८ ॥ ७ ज
श्लोक ॥ अवधूतं द्विजं केच्चि[illegible]तौनयं ॥ कविं निरिक्ष्य तरुणाय
दुःयपप्रछ धर्मवित ॥ २५ ॥ टिका ॥ [illegible]हृयेकु आवधूतु ॥ निजतेजें प्रका
शवंतु ॥ ब्रह्मानंदे डुल्लतु ॥ येदु नि[illegible] देखिला ॥ ३९ ॥ त्या आवधूताचें ल २१
क्षण ॥ यदु निरेखी आपण ॥ देखिलें ब्रह्मसूत्र धारण ॥ होये ब्राह्मण ब्रह्म
वेत्ता ॥ ४० ॥ असोहें तो आवधूतु ॥ निशंक निर्भय वर्ततु ॥ यदु वैहा लिये
कौतां जातु ॥ देखिला वनांतु सन्मुख ॥ ४१ ॥ आंगकुल प्राणात तात्ता ॥ बा

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

२५

हे रिघों नेदि सर्वथा ॥ स्वभावें प्राणायान समता ॥ जालि न धरतां धारणा
॥ ४२ ॥ नवलत याचे पाहाणें ॥ दृश्य द्रष्टवें देखौं नेण ॥ जाला सर्वांग देखणें ॥
देखणेपणों पाहा तुसे ॥ ४३ ॥ मियेकुतनि वसता ॥ देहिं नाठवे त्या ब्यांता ॥ वि
ज्ञालि सर्वत्र सर्वगतता ॥ समस [illegible] समत्वें ॥ ४४ ॥ कर्मकार्य कर्ता
जाया ॥ आवघा जाला तो आप [illegible] येनेवाऊनि यां आया ॥ निबलोण
जीवें केलें ॥ ४५ ॥ देहाचि येमाय [illegible] वि लि होति अंहंता ॥ ते मिथ्यत्वें पा
वतां ॥ समूल अहंता पालालि [illegible] ॥ नित्यानित्य होम द्वारें ॥ ब्रह्माग्नि प्र
ज्वलला येकसरें ॥ जलूनि अभ्रमचि ज्याहि घरें ॥ केलें खरें निराश्रमि
॥ ४७ ॥ त्या आश्रमामाजि होति ॥ शास्त्र श्रवणाचि पोचि ॥ ते जालालि
जिनिश्वी तिप भस्म होति नलगेचि ॥ ४८ ॥ विधि निरोद्ध पैजा ॥ जालि पंचा

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

3

येतदेव पुजा ॥ होता संचित क्रियेमाण पुंजा ॥ तो हि वोजा जाळिला ॥
४९ ॥ या परितो आवधेकलु ॥ ब्रह्मज्ञानें निदुललु ॥ निजसुखें वोल्हाव
लु ॥ देखिला येतु येदुरायें ॥ ५० ॥ समवेत्ता समस्त ॥ प्रपंचु निजबोधें
धलु ॥ याला म्हणि बोलिजे आवधेकलु ॥ येसं विनिश्चितु ब्राह्मण ॥ ५१ ॥ सं
कल्प विकल्पु रहितु ॥ स्मृदु [illegible] विधेकलु ॥ याला म्हणि बोलिजे आ
वधेकलु ॥ यह्न विनिश्चितु ब्राह्म [illegible] परा ॥ वाक्य यांवेंदेहासि ॥ तवेदे ध
हपपाना हि देहापासिं ॥ निम [illegible] विजरेसी ॥ तारूण्यासि तेम्हूल ॥ २२
पण ॥ आणिक हिल्याचि लक्षणे ॥ [illegible] चनाचा बोधु मैलोंनेणे ॥ भोगी
जै क्षित्यनुतनपणें ॥ परमता रूपें घटवटविला ॥ ५४ ॥ निजबोधाचिया
सत्ता ॥ द्वैतंजैसी किलेंनत्वता ॥ ऐसा निर्नौक विचरतां ॥ भयसर्वधात्या

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

3A

नाहिं ॥५५॥ ऐसिं लक्षणें निर्धारितां ॥ अवधूत निज बोधें पुरता ॥ ये दु
सिरु पज्ञलि विनितता ॥ श्रद्धा सर्वथा अनीवार ॥५६॥ करुनि साष्टां
ग दंडवत ॥ अति नम्र श्रद्धायुक्त ॥ हात जोडुनि पुसत ॥ प्रसन्न चित्त राया
चें ॥५७॥ श्लोक ॥ यो मां सा[illegible]को विद्वांश्चरति बालवत ॥ येदु
उवाच ॥ कैं तो बुद्धिरियं ब्रह्मन [illegible]नु विशारदा ॥२८॥ टिका ॥ अपूर्व
बुद्धि हे स्वामि ॥ तुम्ह चोखडी दे[illegible]हि ॥ ज्ञेन लाभे ये मने मि ॥ कर्म
धर्मि आचरतां ॥५८॥ दिसतो सम[illegible]वंगि केवल ॥ परि कोंहि न करुनि
निश्चल ॥ आकर्तात्म बोधें तु केवल ॥ जैसें बाल आहेतुक ॥५९॥ तुं
बाला-याहेस्यावर्तासि ॥ परि बालबुधी नाहिं तुज पासिं ॥ सर्वज्ञ तु सर्व
था होसि ॥ ऐसें आह्मासि दिसतुसे ॥६०॥ येरु नि मनुष्य देहासी ॥ पावो

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai

(५)

नियांयालो कासि ॥ सार्थक ताकृष्मा ऐ सि ॥ आशि ता कां पासिं नदेखें
॥ ६१ ॥ श्लोक ॥ प्रायोध र्मोर्थकामेषु वि वित्ताया चमानवा ॥ हेतुनैव स
मिहेते आपुषोय शास: श्रीय: ॥ २९ ॥ टिका प्राये साधिलो कि लोक ॥ ध
र्म अर्थ काम कामिक ॥ ॥ ये चि [illegible] ताान देख ॥ अवस्यक करिताति
॥ ६२ ॥ आहि स्वधर्म करितो ह[illegible] ॥ स्नान संधे चि कीर्त्ति भिरविति
॥ से खिंगा ये त्रिचें श्री येदे ति ॥ ३[illegible] पूजी लागुनी ॥ ६३ ॥ वेदोक्त अ
ह्मी करितों याग ॥ से स्थापितों [illegible] ॥ से रवी तो करिति द्रीविका २३
योग ॥ स्वर्ग भोग वांछिती ॥ ६४ ॥ येक म्हणती आह्मी स्वकर्मक ॥
कुशम्रति कानाशि ति उदक ॥ समर्थि आलियां पाचक ॥ येवढि मी क
न घलिति ॥ ६५ ॥ दाम्भिक वाढ वावया स्फिति ॥ वैष्णुव दीक्षा आवले

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

५A

बिति॥देवष्ट जाझल फेंल्लि तदा विति॥नं स्वत्ला विति दो हिं हातिं
॥६६॥आयुष दानि पुण्य पुरूष॥ आल्हेंची चिकित्सिक अहिंस॥स्था
वरजंगम जिव अनेष॥मारु नियेय सिरविति॥६७॥येष वाठवा
व्याचे कारण॥तुल्ना पुरुषकी [illegible]न॥देहो विश्राम तृपरिपुर्ण॥
धन त्या समान जो रवीति॥६८॥[illegible]परमार्थी त्रियाचा डा॥को एि
वेष्वि नाक वडा॥कै सिम्न लि पा[illegible] मूढां॥ स्वार्थु रोकडा विसरले
॥६९॥पूर्वि अष्टी नाहि प्राप्ति॥त[illegible]कामना रुपास्तिक रिति॥श्री
येचा स्वामि श्रिपति॥त्यातें न भजति अभाग्य॥७०॥रोग त्यागें
आयुष मागति॥याला गि सविता रुपासिति॥देहो नश्वर हें ना
ठवे चित्तिं॥पडलि भ्रांति निज पदा॥७१॥यवें आयुष वषित्रिका

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(5)

मिं॥समस्तमजनतां देखों आहीं॥परिनवलनुं वांकेलें स्वामि॥
परब्रह्मीं निजबोधु॥७२॥विषयबल आलौकिक॥मिथ्याभ्रमें
भ्रमलें लोक॥ज्ञानसाधनें साधकनि देख॥विषये सुखवांछिति
॥७३॥वेदांतवर्तिकवाकस्फ [illegible] अद्वैतब्रह्मप्रतिपादिलि॥से
वटिपोटासाठीं विकिति॥नव [illegible] तिसांगावें॥७४॥येकह्मण
विति योगज्ञानी॥वायोधारर [illegible] विति जनि॥टाळिलाऊनि बैस
तिध्यानि॥जिविकामनि [illegible] चि॥७५॥ऐसियाविद्धिचिषइ २४॥
लोक॥साङ्गनें साधकनि जाले म्हरवें॥तुंवांकेलें जि अलौलिक॥
अत्मसुसुखसाधिलें॥७६॥ऐके स्वामि पज वधुता॥तुवांन्हरणप्रा
येकेलें जिविता॥तुछ करुनि लोकांसमस्तां॥निजात्महितामिन

Joint project of the Rajawade Samshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

5A

ल्लासि ॥ ७७ ॥ निज्रानंदं निवाल्लासि ॥ अंतरिंसितल्लज्राल्लासि ॥ ऐसें दिसता
हे अस्तासी ॥ उपलक्षणासि परियेसिं ॥ ७८ ॥ श्लोक ॥ त्वंनु कल्पः कविर्दक्षः
सुभगो मत्तभाषणः ॥ न कर्त्ता नेह सेकिं चिज्जडो मत्तपिशाचवत् ॥ २८ ॥
टिका ॥ सर्वज्ञ ज्ञाताल्लें होसि ॥ [illegible]पणा दिसों नेदिसि ॥ कोंहि करि
सिना वोळिसि ॥ जडत्वें दावि[illegible]त्रांति ॥ ७९ ॥ सर्वथा उगा आस
सी ॥ परि तुं अंगविकल्पन हो[illegible]जें सिं अव्यंगु दिसतासि ॥ स्वरूपस
पें सिं शोभीतु ॥ ८० ॥ ज्ञामयकल[illegible]पोंढलें ॥ दुजें निविणपरैंशि ज्रालें ॥ दे
ते तुं जमाङिसा मावलें ॥ यीला भि आलें कविपद ॥ ८१ ॥ करुनि डोला
सि आकर्ती ॥ हे खिन्नु स्त्रिथोर दक्षता ॥ ब्रह्मरसें रसाल बोलता ॥ चवि ऐं
मनाते कैचि ॥ ८२ ॥ ब्रह्मरसु तुं व्याल्लासि ॥ ब्रह्मानंदें मातल्लासि ॥ ड

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai"

(6)

जभिंऽन्मतु जालासी ॥ दृष्टि नाथिलि सिकोंण्हों तें ॥८३॥ सदा सावधान निजरूपें
सिं ॥ यालागि माझेंतु सैंनसत्तणासि ॥ तें स्थिपिसेपणतु जपासिं ॥ दिसेजगासि
सर्वथा ॥८४॥ निजबोधेंतु सजालासि ॥ परमामृतें निवालासि ॥ जें हि लक्ष
तोंतु जपासिं ॥ निर्धारें सिंदिसतासि ॥८५॥ श्लोक ॥ जनेषु दह्यमानेषु का
मलोभवाग्निना ॥ नतप्यसे अग्नि[illegible] गंगा मध्यस्थ इव द्विप ॥ ॥२६॥ टिका ॥
कामलोभदावाग्नि ॥ माजि जलत[illegible]कतिज्ञि ॥ देखतु असें तीनयेनी
॥ वेगला कोण्ही दिसेना ॥८६॥ [illegible]ग्निमाजि आसतां ॥ तुं पोलसीना २५
आवधकता ॥ नवलतु झि अक्षोभता ॥ न कले सर्वथा ज्ञा ह्मासि ॥८७॥
वणवा जलतां दोहि थडि ॥ गजें गंगाजलिं दिधलि बुडि ॥ त्यासि नलग
ति तापाच्या वोढि ॥ तैसि निर्वडितु जदेखों ॥८८॥ ऐसिं द्वंद्वें तु जनातल

...the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

ति॥ दृढ राहिला सि ब्रह्म स्थिति॥ कां हियेकि करि न विनीति॥ कृपामूर्त्ति
दयालुवा॥ ९॥ श्लोक॥ त्वहिनः पृच्छतां ब्रह्मन्नात्मन्यानंदकारणं॥ ब्रूहि
स्पर्शविहिनस्य भवतः केवलात्मनः॥ ३०॥ टिका॥ तुं ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण॥ नि
ज्ञानंदें परिपूर्ण॥ त्या आनंदा वेग[illegible] विषेद करून सांगावें॥ १०॥ तुं देहिव
र्त्तें सि विदेह स्थिति॥ तुज विषय [illegible] तैं न स्राकति॥ हे आलिप्तपणा चि प्रा
प्ति॥ कवण्या रिति तुज जालि॥ ११॥ [illegible] जना हिरायाचि भिड॥ न करि सिघ
न वेत्ताचिं चाड॥ दिन वचन मानि [illegible]डें॥ पुरवि सिकोड निज बोधें॥ १२॥
ऐसा केवल तुं कृपाल॥ आर्त्तबंधु दिन दयालु॥ निजात्मभावें तुं केवलु॥
भक्तवछल भावार्थी॥ १३॥ ऐसा यदु संवादु॥ आवडि सांगे गोविंदु॥ उद्धवा
सिस्नणे सावध॥ हृदयिं बोधु धरावा॥ १४॥ श्लोक॥ श्रीभगवानुवाच॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(४)

यदुनैवमाहाभागो ब्रह्मण्येन सुमेधसः ॥ पृष्टसभाजितः प्राहः प्रश्रयावनतं बु
पः ॥ ३१ ॥ टिका ॥ श्रीमुखें श्रीकांत ॥ येदुचें भाग्य वर्णिलें ॥ तो ॥ ब्राह्मण भक्त सत्व
युक्त ॥ बुद्धिवंत श्रद्धालु ॥ ९५ ॥ भगवद्भाग्यें भाग्यवंतु ॥ येदुसि भेटला तो
आवधूतु ॥ त्यासि होउनि अतिविनितु ॥ असे चिनवितु निजहितु ॥ ९६
मृदमंजुलवचनि प्रार्थिला ॥ मग विद्वानें पुसिला ॥ आवधूतु आ
तिसे तोषला ॥ बोलता जाला सुखें ॥ २७ ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ संत मे गु २५
रवो राजन्बहवो बुद्ध्युपाश्रिताः ॥ यतो बुद्धिमुपादाय मुक्तोटामीह तां श्रृ
णु ॥ ३२ ॥ टिका ॥ क्षीरसागरु चंबळला ॥ किं कृपेचा मेघु गर्जिनला ॥ निज
सुखाचा वाधावा आला ॥ तैसें बोलिला ब्राह्मणु ॥ २८ ॥ ऐकें राजचुडा
मणि ॥ विवेककुलदिपु दिनमणि ॥ धन्य धन्य तुझी वाणी ॥ निजगुणिं

A joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

वविलें ॥ ९९ ॥ राजा आणि सात्विकु ॥ सिद्ध लक्षणें लक्षिकु ॥ ए धिमाजि
तुं विवेकु ॥ न दिसे आणिकु सर्वथा ॥ ३०० ॥ सुंदर आणि सगुण ॥ उत्तमो
त्तम केला प्रश्न ॥ पुसिलें निजानंद कारण ॥ यथार्थ जाणासी मेन ॥ १ ॥ गुरु
विण आत्मप्राप्ति ॥ सर्वथा न घडे [illegible] पाति ॥ ते गुरु मिळुन प्रति ॥ यथा निगु
ति संयोगेन ॥ २ ॥ निज बुद्धिच्या [illegible] स्थिति ॥ बुडत गुरु म्यां केले आसक्ति
जो जो सद्गुरु या देखिजे भ्रूपति ॥ [illegible] थति बुद्धिवंत [illegible] ॥ तो गुरु ॥ ३ ॥
बुद्धि निअंगिकारिलें गुणा ॥ [illegible] यें धरिलि धारणा ॥ तेणें मि मुक्त
जालों जाणा ॥ स्वेच्छा आठवणा केरिलुसें ४ ॥ ससारु तरावया ॥ सुखे
सद्बुद्धि गा राया ॥ गुना हि आणि काळपाया ॥ वेर्थ का ह्या सिणावें ॥
५ ॥ सुबुद्धि ना हि त्या पासिं ॥ तो संसाराचि आंदणि दासि ॥ ६ संलुना

Joint Project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(8)

हिअहिन श्रि॥दुरवभोगासि अनंतं॥६॥सुबुद्धिना हिहृदयें भ्रवनि॥
तेथें वैराग्याकुप ज्ञेमनि॥मात्तोनरेल कैसेनि॥विवेकस्वप्निन देखे॥७॥
वैराग्याचे निपडि पाडें॥ज्यासि सद्बुद्धि सांपडे॥तेथ संसारू कोण बापु
डें॥घायें रोकडें विभांडि॥८॥[illegible] संसारयेकु असावा॥मगतो रवद
ळेपें नासावा॥जो रिघाला वि[illegible]वां॥त्यासि ते कां तो नाहि॥९॥संसा
रना॥ज्ञासि मूल॥शिष्यप्राज्ञा चि[illegible]ल॥तिचें जालियां आढलबल॥ २७
होये मृगजल संसारू॥१०॥[illegible]रू सांगेन ह्मणे॥ते नित्यप्रज्ञे चिंल
क्षणें॥हे यावयारुपायेलक्षणें॥घेणे त्यजन तोंसविवेकें॥११॥हे चिमह्रा
टिया भाषा॥साभैन तेसावध ऐका॥जेणें शिष्याचा आंवांका॥पडेठा
उका प्रत्यक्षा॥१२॥ऐक प्रज्ञेचिं लक्षणें॥सांगेन दृष्टांत परतें॥सूर्येचा

लणिरांधवणें ॥ दिसेतीत्यजनपणेंसविवेकें ॥१३॥ चालतणीमाडिजेंजेंपडे ॥ सूक्ष्मनि
जतत्वतलिंसांडे ॥ उरतिगुणदोषाचेखडे ॥ करिबडबडेरवडबडित ॥१४॥
ऐसिजेहेअवस्था ॥ तेत्यागातिसर्वथा ॥ जंभ्रुहोयिलस्वार्था ॥ हेराख
तांत्रिशुद्धि ॥१५॥ स्वरूपाचिद्दृ[illegible]सि ॥ त्यजिनिकरणजन्मसासि ॥
निडारल्यानिजबिजासी ॥ निज[illegible]सिंराखत ॥१६॥ स्वयेंवैराग्येंता
पणें ॥ तेदशारांधवणेंम्हणे ॥ अ[illegible]रिपक्वकरणें ॥ निजगुणेंनिजांगें
॥१७॥ यवेयादाक्षिदृशा ॥ दृढधैरावृपावीरेश्रा ॥ तेणेंपरमार्थहोयेअ
पैसा ॥ जेविआरिसाहातिचा ॥१८॥ येदुनिशिस्नपणेबासनपणेंजेम्यांसांभित
लेलक्षया ॥ तेथेंठेउनियांमन ॥ सावधानपरियेसिं ॥१९॥ जोजोज्याचा
घेतलागुणें ॥ तोतोम्यांगुरुकेलाजाण ॥ गुरुनिआलेंआपारपण ॥

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

9

नयासंपूर्ण गुरु दिसे ॥ २० ॥ जो चा गुणु घेतला ॥ तो सहजें गुरुत्वा आला ॥ ज्या
च्या गुणु त्याग रूपें घेतला ॥ तो हि गुरु जाला अहित त्यागें ॥ २१ ॥ एवं त्याग
त्यागसमतुकें ॥ दोन्हि सि गुरुत्व आलें निकें ॥ राया तु पाहें पां विवेकें ॥ त्रमाचि
आसकें गुरु दिसे ॥ २२ ॥ ऐसें सांग[illegible] चाट ॥ तु ज वाटेल हे कचाट ॥
तरि गुरु सांगों श्रेष्ट श्रेष्ट ॥ मा[illegible]ष्ट निज बुद्धि ॥ २३ ॥ श्लोक ॥ पृथ्वि
वायुराकाशमापो ग्निश्चंद्र मार [illegible] कपोतो अजगरः सिंधुः पतंगो मधुकृद्
दृग्जः ॥ ३३ ॥ मधुहा हरिणो मीन[illegible] कुररो र्भकः ॥ कुमारी शरकृत्स २८
र्प ऊर्णनाभिः ॥ सुपेशकृत ॥ ३४ ॥ टिका ॥ गुरु सांगेन आ...शेष ॥ संख्याप्र
माण चोविस ॥ त्यांचि नामें तु परियेसा ॥ सावकास सांगेन ॥ २५ ॥ पृथ्विवा
यु आकाश ॥ आग्नि आप नीशि तारा ॥ सत वांतो चंडांश ॥ कपोत आपसि

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

१A

आटवां ॥२४॥ आजगर सिंधु पतंग ॥ मधु मक्षी का गज भृंग ॥ हरिणमी
नवैश्या चांग ॥ नामें सुभंग पिंगला ॥२५॥ टीटीवा आणीलें करुं ॥ कुमा
रि आणि शरकारु ॥ सर्प कोंतिणि येना स्कारु ॥ इतुके नि गुरुचो विस ॥
२६॥ पावावया तत्व पंचविसावें ॥ चोवीस गुरुं सिद्धपासोवें ॥ विवेकयु
क्ति स्वभावें ॥ गुरु मना वेनि [illegible] ॥२७॥ टाकावया निज बोधासि ॥
निज विवेकें आहि निंद्रि ॥ गुरु [illegible] आनेकासि ॥ निज हित्तासि
गुरु केले ॥२८॥ कोणा युक्ति कोण विचारु ॥ कोणे लक्षणें कोणगु
रु ॥ केला तो हि निज निर्द्धारु ॥ सविस्तरु परियेसिं ॥२९॥ श्लोक ॥ एते मे रे
गुरुवे राजन्न चतुर्विंशाश्रिता श्रीता: ॥ शिक्षावृत्तिभिंतेषामन्वशिक्ष
मिहात्मन: ॥३०॥ ऐकें राजवर्य नृपति ॥ विवेक धवल चतुर कीर्ति ॥

10 गुरु संख्यानुजप्राप्ति ॥ किंचे यथा निगुत्ति सांगीतलि ॥ ३० ॥ यों त्वियानिशि
क्षीतावृत्ति ॥ सीकलों आपुल्या पुत्रि ॥ मगयावलों आत्मरिथति ॥ विक
ल्प भ्रांति सांडुनि ॥ ३१ ॥ श्लोक ॥ यतोयदनुशिक्षाभिय थावानुहुषात्म
जा ॥ तत्वथायुरुषव्याघ्र निबोध [illegible] मिते ॥ ३२ ॥ टिका ॥ नहुषाचा पुत्र
ययाति ॥ ययातिचा यदु निश्चि [illegible] हुषनंदनयदु सिद्धणाति ॥ म्हलय
उत्पत्तिये जेयोगें ॥ ३२ ॥ याल्ने [illegible] नहुषनंदना ॥ पुरुषांमाजि पंचा २९
नना ॥ सांगेनगुरुच्या लक्षणा ॥ [illegible] लक्षणा परियेसि ॥ ३३ ॥ ज्यागुरुचे
जे शिक्षीत ॥ मीसीकलों सुनिश्चीत ॥ तें तेसांगेन समस्त ॥ सावधचि
त करिराया ॥ ३४ ॥ ऐकाव यागुरुलक्षण ॥ येदुनि सर्वांग केले श्रवण ॥
अर्थि बुडऊनियां मन ॥ सावधान परिसतु ॥ ३५ ॥ जोंसांडुनियांमागें ब

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क


**इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे**

राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)

**दूरध्वनी क्रमांक** (०२५६२) २३३८४८

**Email ID** : rajwademandaldhule@gmail.com